E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2022 Volume 3 Issue IV (B) SJIF Impact- 5.64

Index

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No
1	समकालीन आदिवासी कविताओं में पर्यावरण-बोध	डॉ. गिरीश कुमार. के. के	05
2	इस्लामिक समाज और स्त्री शिक्षा	डॉ. मो. माजिद मियाँ	09
3	सामन्ती व्यवस्था की आलोचना करती फिल्म 'अछूत कन्या'	सितारे हिन्द	13
4	छायावादी कविता में दलित वर्ग का स्थान	डॉ.बिन्दु कनौजिया	16
5	प्रयोगशीलता की दृष्टि से ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों का अनुशीलन	डॉ.रमेशकुमार गवळी	19
6	आदिवासी अस्मिता और आदिवासी लेखन	मयुरी मजुमदार	25
7	उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ मण्डल में सेब उत्पादन एवं उत्पादकता का प्रतिरूप एवं प्रवृत्तियाँ	जितेन्द्र प्रसाद डॉ. मोहन लाल	29
8	दिनकर के काव्य में युग चेतना	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	36
9	वेदांत से व्हाट्सएप तक जेन्डर सेन्सिटाईजेसन	रमेश बाबू	40
10	बरेली जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति: एक अध्ययन	अर्चना देवी डॉ. आर. के. सिंह	43
11	जनपद नैनीताल में प्रवासियों का व्यवसाय परिवर्तन	घनानन्द पलड़िया	48
12	भारतीय स्वाधीनता संग्राम में पंजाब प्रांत की महिलाओं का योगदान	डॉ.मंगत राम	55
13	पलायन का विश्लेषणात्मक अध्ययन : बुंदेलखण्ड़ क्षेत्र के विशेष संदर्भ में	शैलेन्द्र प्रताप सिंह परिहार डॉ राजेश त्रिपाठी	58
14	साहित्य में सामाजिक सरोकार का महत्त्व	लवली रानी	61
15	नारी जीवन के संघर्ष और विवशता का सामाजिक दस्तावेज : सेवासदन	डॉ.योगेशभाई प्रतापसिंह झाला	65
16	अशोक चक्रधर की कविताओं में राजनीतिक हथकंडे	श्रीमती रोशनी दिनेश नायक	70
17	संस्कृत काव्यशास्त्रीय चिंतन परम्परा का संक्षिप्त विवेचन	डॉ. रेनू दीक्षित संजीव भोरिया	74
18	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी फिल्मों में हास्य-व्यंग्य	डॉ. सत्यजीत कुमार	77
19	एक सफल प्रयोगधर्मी नाटककार: जगदीशचंद्र माथुर	डॉ.भानुदास आगेडकर	80
20	'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में आँचलिकता	प्रा. डी.एस.घुटुकडे	85
21	आधुनिक हिंदी कविता के क्षेत्र में श्रीधर पाठक का योगदान	डॉ.अमोल दंडवते	88

(5)

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2022 Volume 3 Issue IV (B)

SJIF Impact- 5.64

Index

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No
1	समकालीन आदिवासी कविताओं में पर्यावरण-बोध	डॉ. गिरीश कुमार. के. के	05
2	इस्लामिक समाज और स्त्री शिक्षा	डॉ. मो. माजिद मियाँ	09
3	सामन्ती व्यवस्था की आलोचना करती फिल्म 'अछूत कन्या'	सितारे हिन्द	13
4	छायावादी कविता में दलित वर्ग का स्थान	डॉ.बिन्दु कनौजिया	16
5	प्रयोगशीलता की दृष्टि से ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों का अनुशीलन	डॉ.रमेशकुमार गवळी	19
6	आदिवासी अस्मिता और आदिवासी लेखन	मयुरी मजुमदार	25
7	उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ मण्डल में सेब उत्पादन एवं उत्पादकता का प्रतिरूप एवं प्रवृत्तियाँ	जितेन्द्र प्रसाद डॉ. मोहन लाल	29
8	दिनकर के काव्य में युग चेतना	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	36
9	वेदांत से व्हाट्सएप तक जेन्डर सेन्सिटाईजेसन	रमेश बाबू	40
10	बरेली जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति: एक अध्ययन	अर्चना देवी डॉ. आर. के. सिंह	43
11	जनपद नैनीताल में प्रवासियों का व्यवसाय परिवर्तन	घनानन्द पलड़िया	48
12	भारतीय स्वाधीनता संग्राम में पंजाब प्रांत की महिलाओं का योगदान	डॉ.मंगत राम	55
13	पलायन का विश्लेषणात्मक अध्ययन : बुंदेलखण्ड क्षेत्र के विशेष संदर्भ में	शैलेन्द्र प्रताप सिंह परिहार डॉ राजेश त्रिपाठी	58
14	साहित्य में सामाजिक सरोकार का महत्त्व	लवली रानी	61
15	नारी जीवन के संघर्ष और विवशता का सामाजिक दस्तावेज : सेवासदन	डॉ.योगेशभाई प्रतापसिंह झाला	65
16	अशोक चक्रधर की कविताओं में राजनीतिक हथकंडे	श्रीमती रोशनी दिनेश नायक	70
17	संस्कृत काव्यशास्त्रीय चिंतन परम्परा का संक्षिप्त विवेचन	डॉ. रेनू दीक्षित संजीव भोरिया	74
18	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी फिल्मों में हास्य-व्यंग्य	डॉ. सत्यजीत कुमार	77
19	एक सफल प्रयोगधर्मी नाटककार: जगदीशचंद्र माथुर	डॉ.भानुदास आगेडकर	80
20	'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में आँचलिकता	प्रा. डी.एस.घुटुकडे	85
21	आधुनिक हिंदी कविता के क्षेत्र में श्रीधर पाठक का योगदान	डॉ.अमोल दंडवते	88

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2022 Volume 3 Issue IV (B) SJIF Impact- 5.64

20

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में आँचलिकता

प्रा. डी.एस.घुटुकडे,
सहायक प्राध्यापक, भारती विद्यापीठ,
मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्यालय, कडेगाव, जि. सांगली

हिंदी औपन्यासिक क्षेत्र में आँचलिक प्रवृत्ति एक विशेष और नवीन प्रवृत्ति के रूप में स्थापित हुई है। रचनाकारों ने प्राकृतिक घटकों की विशेषता के माध्यम से विभिन्न प्रदेशों की लोकसंस्कृति की सजीवता, सुंदरता, स्थानिक यथार्थ की सघनता एवं सम्रगता का अत्यंत सुक्ष्म चित्र उपस्थित कर ग्राम आँचल की ओर लोगों का ध्यानाकर्षित किया। कथानक और पात्रों के साथ - साथ परिवेश की यथार्थता आँचलिक उपन्यासों का महत्वपूर्ण सूत्र रहा है।

आँचलिक उपन्यास महानगरीय सभ्यता से दूर गाँवों, देहातों, कस्बों तथा प्रकृति की गोद में रहने वाले अनपढ़, भोले-भाले मानव-जाति का प्रतिनिधित्व करने का एक सशक्त माध्यम बना है। इन उपन्यासों में गाँवों के खेत-खलियान, नदियाँ, जंगल, पेड़-पौधे, सागरतट, विशिष्ट आँचल की संस्कृति, उत्सव, पर्व, रीति-रिवाज, वेशभूषा, अचार-विचार, मुहावरों, लोकोक्तियों, ग्रामीण बोलियों, धर्म-जाति, सभ्यता, विभिन्न प्राकृतिक दृश्यों आदि से उपन्यास का ताना-बाना बुना होता है। आँचलिक उपन्यासों में कथानक का नाविन्य, यथार्थ परिवेश, चरित्रों की विशिष्ट मन:स्थितियाँ, आँचलिक भाषा, बिम्ब, प्रतीक, अंचल के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण आदि तत्वों के उपन्यासों ने उपन्यास के क्षेत्र में धूम मचाई। ''हिंदी उपन्यास साहित्य में आँचलिक उपन्यास एक नया क्रांतिकारी मोड़ है। आँचलिक उपन्याम भौतिकवादी कृत्रिम नागरी सभ्यता से दूर प्रकृति की मनोहारी गोद में स्वाभाविक जीवन जीनेवाले सरल, सहृदय, गुणदोषयुक्त मानव-समूह की समस्त जिंदगी को उसकी सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना के समय सापेक्ष संदर्भ में व्यक्तित्व तथा अभिव्यक्ति प्रदान करता है।''[1]

अब्दुल विस्मिल्लाहजी ने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में पहाड़ी जन जीवन की कथावस्तु के माध्यम से हिन्दुस्तान के तमाम देहातों, कस्बों, ग्रामों की स्थिति एवं गति को उजगार किया है। उपन्यास की कथावस्तु किसी विशेष गाँव, जाति, धर्म, वर्ग की नहीं है अपितु सामान्य भारतीय जनमानस की कथा है, जो हर ग्रामीण व्यक्ति से निकटता रखती है।[2] उपन्यास में वर्णित प्रसंग एवं घटनाएँ आज भी देश के किसी न किसी कोने में घटित हो रही हैं जिससे उपन्यास की कथावस्तु यथार्थ के करीब लगती है, यही कारण है कि उपन्यास देश की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालता है और ग्रामों की दशा पर सोचने के लिए मजबूर करता है। स्वाधीनता जैसी घटनाएँ ग्रामीण इलाके में रहनेवाले लोगों से मायने नहीं रखतीं; आज भी वहाँ के लोग सच्ची आजादी से वंचित हैं, आज भी आजादी का उन्हें इंतजार है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने गाँव के सभी जाति-धर्म के जीवन-दर्शन से ग्रामों की सांस्कृतिक एकता, रीति-रिवाज, परंपराएँ, खानपान, उत्सव-पर्व, लोककथाएँ, जीवनव्यवस्था, व्यवहार, आर्थिक, सामाजिक जागरण, अंधविश्वास, आदि का सजीव चित्रण उपस्थित करके ग्रामीण लोक-जीवन की आकर्षक प्रतिमा पाठकों के सामने खड़ी की है। लेखक ने इस उपन्यास में स्थान विशेष से संबंधित मानवी जन-जीवन की संवेदनाओं और मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है। दुनिया की आपाधापी में इन दूर-दराज के आँचलों का, वहाँ के समूह-जीवन की सूक्ष्मता का, नये-पुराने मूल्यों से ओतप्रोत जीवन का, अनपढ़, अशिक्षित लोगों के उपेक्षित जीवन के प्रश्नों का, सामान्य जनमानस की आकांक्षाओं का सटीक वर्णन करके मानवीय संवेदनाओं का लेखा-जोखा पेश किया है। लेखक ने ग्रामीण भागों में विकास के नाम पर उत्पन्न विकृतियाँ, ग्रामीण जीवन की हड़पनीति, किसानों, मजदूरों का शोषण, विकास के नाम पर विस्थापन, टूटते हुए ग्रामीण परिवार, जातीय एवं धार्मिक भेदभाव, दलित-सवर्ण संघर्ष, किसान आंदोलन की उद्भावना आदि घटनाओं को वाणी देकर संपूर्ण ग्राम-जीवन का प्रतिनिधित्व किया है। भाषा की स्थानीयता ने ग्रामीण परिवेश को जिंदा बनाया है। ग्रामजीवन पर आधारित कथानक उपस्थित करके लेखक ने ग्राम आँचलिकता के चित्रण में अपने गहन और व्यापक अनुभवों का यथार्थपरक प्रस्तुतिकरण किया है तथा आँचलिकता को स्थायी पहचान के रूप में स्वीकार किया है।

यथार्थ परिवेश आँचलिक उपन्यास की आत्मा होता है। परिवेश ही समस्त स्थानागत विशेषताओं को सजीवता से प्रतिबिंबित करता है। प्राकृतिक परिस्थितियाँ ही उस प्रदेश को व्यक्तित्व प्रदान करती हैं। अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने विवेच्य उपन्यास में प्राकृतिक उपादानों का मानवीय जीवन से संबंध जोड़ते हुए उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बलापुर, नैनी, मुडकी,

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
April-June 2022 Volume 3 Issue IV (B) SJIF Impact- 5.64

करछना, घुरपुर, दुल्लोपुर के पहाड़ी इलाके के अनुपम सौंदर्य को शब्दबद्ध किया हैं। बलापुर के एक प्रसन्न सुबह का वर्णन करते हुए कहते हैं- ''सुबह हुई, बादलों से लुका-छिपी खेलते सूरज ने बलापूर के मंदिरों, गड़हियों-तालाबों और आसपास फैले जुते-अनजुते खेतों पर अपनी धब्बेदार किरनों का जाल फैंका, चिड़ियों ने उड़ान भरी, गाएँ रंभाई, मोती-बउ ने पूजा के गीत गाए।''[3] यहाँ लेखक की यथार्थपरक सूक्ष्म दृष्टि के कारण ग्रामों का रूप निखरकर सामने आया है। लेखक ने उपन्यास के पहाड़ी परिवेश के चित्रण में अपनी सूक्ष्म निरीक्षण-क्षमता का परिचय दिया है। विभिन्न ऋतुओं में होनेवाले प्राकृतिक हलचलों से प्रभावित मानवी-जीवन तथा प्रकृति के बदलते रंगों का वर्णन उपन्यास में जान भर देता है। बरसात के दिनों में खूब वर्षा होने के कारण धरती पर चारों ओर जलाहल होना, बरसात के दिनों में ही पहाड़ों का हरा- भरा होना, पहाड़ों से पानी गिरना, नदियों का छुल-छुलकर बहना, वर्षा ऋतु के बाद कटी हुई फसलों के कारण नीले-नीले पहाड़ों के दर्शन होना, पहाड़ की ऊबड़-खाबड़ जमीन, तालाब का अनुपम सौदर्य, जमीन पर तैयार छोटे-बड़े चढ़ाव आदि के यथार्थ वर्णन से लेखक ने पाठकों को भावविभोर कर दिया है। पहाड़ी लोगों का रहन- सहन, व्यवहार, संस्कृति आदि का लेखक ने बारीकी से वर्णन किया है। चमार, कुम्हार, हलवाई, बनिया आदि जातियों का अपना-अपना कारोबार उस प्रदेश के साथ स्थापित अपनी एकात्मता का परिचय देता है। दूर पहाड़ों के बीच नदी-तालाब, पर्वत शृंखला के किनारे छोट-छोटे पहाड़ी देहातों में रहनेवाले लोग, सुख-दुख बाँटते हुए, परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपना जीवन जी रहे हैं। छोटे-छोटे पहाड़ों पर बच्चे तथा औरतों का ढोर-डाँगर चराना, चरवाहों के लड़के-लड़कियों का खेलना आदि का चित्रण उपन्यास में पहाड़ी आँचल की सूक्ष्मता को व्यक्त करता है। लेखक ने पहाड़ी भूभाग चित्रण के माध्यम से प्रकृति और मानव का गहरा संबंध दिखाकर कुदरत की हरियाली का सुहावना परिचय दिया है। पिछड़े गाँव, खेत-खलियान, लोकगीत, जलवायु, भाषा के विशिष्ट रूप, लोकसंस्कृति और प्रकृति के मनोरम दृश्य आदि का उस प्रदेश के मानव-समूह से तादात्मय स्थापित करके लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास को आँचलिकता की भावभूमि पर खड़ा किया है। प्राकृतिक एवं भौगोलिक स्थितियों के यथार्थ चित्रण से लेखक ने पहाड़ी ऑचल की समग्रताओं, जटिलताओं एवं विविधिताओ को स्वर दिया है जिससे लेखक के प्रयोगधर्मी प्रवृत्ति का परिचय प्राप्त होता है।

लेखक ने शिक्षा आधुनिकीकरण, विकास, प्रगति जैसे बड़े-बड़े शब्दों के साये से भी दूर ग्रामीण, पहाड़ी आँचल में रहनेवाले समाज की ऊँच-नीच जातियों के बीच निर्मित संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। इस संघर्ष की ज्वाला में कई नारियों को शोषण का शिकार होना पड़ा है। उपन्यास की एक नारी फुल्ली दाई दलित परिवार की होने के कारण गाँव के जमीनदारों से होनेवाली बेइज्जति को चुपचाप सहती है। जमींदार उस पर अन्याय-अत्याचार करते हुए धमकाते हैं, इन प्रसंगों से जातीयता के नाम पर होनेवाले स्त्री-शोषण का चित्र स्पष्ट हुआ है। फुल्ली दाई अपनी नातिन रामकली की इज्जत लुटने पर भी शांत रहती है, क्योंकि वह दलित परिवार की है और गाँव के जमींदारों के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती तथा गाँव की समाजव्यवस्था से उसे न्याय मिलने की आशा नहीं है। इस प्रसंग के माध्यम से सबलों के जुल्म जबर्दस्ती के शिकार हुए परिवार की स्थिति को उजागर किया गया है। बुद्धू-भूरी प्रेम में जातीयता के कारण सृष्टिनारायण पाण्डे भूरी की गाँव में बदनामी करते हैं, उसके पिताजी का घर लूटते हैं, तथा उसकी बहन पर अत्याचार करते हैं, इन घटनाओं के माध्यम से प्रस्तुत उपन्यास में अन्याय-अत्याचार करनेवालों के खिलाफ लड़नेवालों की आवाज हमेशा के लिए दबाई जाती है, अथवा उन्हें सबलों के जुल्म का शिकार होना पड़ता है इस दयनीय व्यवस्था को लेखक ने शब्दबद्ध किया है। ''नारी भले दलित हो, भले सवर्ण हो पुरुषप्रधान संस्कृति में वह हमेशा से अभावग्रस्त और शोषित रही है। अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने नारी की विभिन्न समस्याओ को स्वर देकर उसके शोषण के विभिन्न आयामों को उद्घ्घटित किया है।''[4] स्वाधीनता के पश्चात अज्ञान एवं पूंजिपति-अन्यायी समाजरचना के बीच नारियों की स्थितियों में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ तथा शोषण की पीड़ा से मुक्ति भी नहीं मिली। आधुनिकता की हवा से दूर पहाड़ी क्षेत्रों में रहनेवाले ग्रामीण अँचलों के इस बेबस, निरीह, उपेक्षित, अबोध, औरतों के शोषण को लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में अभिव्यक्ति दी है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने दलित-सवर्ण संघर्ष को स्पष्टोक्ति दी है। इस उपन्यास को बहुसंख्यक अथवा अल्पसंख्यक समाज की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता क्योंकि उपन्यास का केंद्रीय गाँव बलापुर जातियों में बँटा है। गाँव के सभी सवर्ण लोग मिलकर दलित लोगों का शोषण करते हैं। स्वाधीनता के पश्चात भी दलित लोगों को उपेक्षाभरी दृष्टि से देखकर गाली गलौज किया जाता है। इस पर उपन्यासकार ने गहरी चिंता प्रकट की हैं। गाँव के जमींदार रामवृक्ष पांडे की लड़की के विवाह में अली अहमद चुडिहार उपस्थित नहीं रहता। इस घटना से क्रोधित होकर रामवृक्ष पांडे अली अहमद की पिटाई करते हैं

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2022 Volume 3 Issue IV (B) SJIF Impact- 5.64

। ग्रामीण जीवन में जातीय एवं धार्मिक भेदाभेद की जहरीली हवा से मानवी मूल्यों में आई गिरावट का चित्रण लेखक ने प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है। सांप्रदायिकता की हवा से देहातों में रहनेवाले छोटे-छोटे बच्चे भी प्रभावित हो रहे हैं। अशोककुमार पाण्डे बुद्धू को 'मुसल्ला', 'कटुआ' कहके चिढ़ाकर अपमानित करते हैं। इन घटनाओं से ग्रामों में रहनेवाले दलित समाज के लोगों की स्थिती कितनी भयावह है इसका परिचय प्राप्त होता है।

गाँव के जमींदार तथा सवर्ण दलित लोगों को किसी भी प्रकार का हक एवं अधिकार देना नहीं चाहते तथा पैसों एवं ताकत के बल पर उन गरीबों पर रोब जमाते हैं, अन्याय-अत्याचार करते हैं। जिससे उपन्यास में अनेक जगह दलित-सवर्ण संघर्ष खड़ा होता है। सृष्टिनारायण पाण्डे, मुन्ना, नचनिया को जबर्दस्ती से रखैल बनाते हैं तथा गालियाँ देकर, पिटाई करके उसे गाँव से निकाल देते हैं। सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या के जुल्म में अशोककुमार पाण्डे गाँव के गरीब बेगुनाहों को गिरफ्तार करवाता है। जब्बार मौलवी साहब स्वयं को उच्चवर्गीय मुसलमान समझते हैं और गाँव के किसी भी गुसलमान से रिश्ता रखना नहीं चाहते, जिससे वर्गीय संघर्ष उभर आता है। रामदेउवा चमार के धर्मांतर करने के कारण सृष्टिनारायण पाण्डे बुद्धू को धमकाते है। आजादी के बाद भी हिन्दुस्तान के ग्रामों में रहनेवाले दलित लोगों के जीवन की व्यथा, त्रासदी, पीड़ा, विवशता में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ, देश के विभिन्न ग्रामीण इलाकों में दलित स्त्रियाँ, छोटे गरीब बच्चे अपराधी की भाँति अत्याचार सह रहे हैं, इस दर्दनाक स्थिति से जल्दी से जल्दी मुक्ति पाने की ख्वाइश लेकर बरसों से तरस रहे हैं। ग्राम आँचलों में रहनेवाले दलित अपनी व्यथा से आक्रोशित होते हैं और संघर्ष करते हैं। इस संघर्ष का चित्रण पाठकों को विमुख कर देता है। प्रस्तुत उपन्यास ग्रामीण वातावरण से अधिक संबंध रखता है। उपन्यास के पात्र ग्रामीण पहाड़ी परिवेश के होने के कारण उनकी भाषा में ग्रामीण बोलचाल की भाषा के शब्दों की तथा वाक्यों की बहुलता है। उपन्यास की कथावस्तु में संबंधित प्रदेश की लोकबोली के रूप में बुंदेलखंडी भाषा है। लोकगीतात्मक भाषा, मुहावरों कहावतों तथा सुक्तियों के प्रयोग से उपन्यास में आँचलिक जनजीवन की प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं तथा भाषा का सौदर्य बढ़ता है।

निष्कर्ष :-

अब्दुल बिसमिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में वर्णित ग्राम आँचल के विभिन्न आयामों से हिन्दुस्तान के गाँव जीवन की झाँकी यथार्थरूप से झलक उठी है। ग्राम आँचलिकता के सूक्ष्म चित्रण से लेखक ने पाठकों को ग्रामीण संस्कृति तथा लोकजीवन से परिचित करा दिया है। पहाड़ी जनजीवन का चित्रण उपन्यास में परिवेश की सजीवता तथा सुंदरता की पुष्टि करता है साथ ही आधुनिक युग में भी पहाड़ी इलाकों में रहनेवाले लोग कितनी दयनीय स्थिति का सामना करते हुए अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं इस पर प्रकाश डालता है। उपन्यास में वर्णित नारी-शोषण का चित्रण तथा दलित-सवर्ण संघर्ष का चित्रण अपनी समाजव्यवस्था एवं रूढिग्रस्त मानसिकता को उजागर करता है। लेखक की सूक्ष्म-निरीक्षण क्षमता एवं अनुभवसंपन्न दृष्टि के कारण पहाडी आँचलों के लोगों के व्यवहार, रहन-सहन, आचार-विचार का इतना सजीव चित्रण व्यक्त हुआ है कि पाठक आसानी से हिंदुस्तान के गाँवजीवन से परिचित हो जाते है। ग्रामजीवन के विभिन्न पहलुओं का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में करते हुए लेखक ने वहाँ के परिवेश में उभरे शोषण, संघर्ष की स्थिति की भयानकता एवं पहाड़ी भूभाग की सजीवता और दयनीय अवस्था को उपन्यास का केंद्रीय विषय बनाकर स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की स्थिति को वाणी देने का सराहनीय प्रयास किया है। आँचलिक उपन्यास की धारा में 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास देश के ग्रामजीवन का प्रतिनिधित्व करने में सफल हुआ है और हिंदी उपन्यास क्षेत्र में 'मील का पत्थर' सिद्ध हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. डॉ. झाल्टे दंगल, 'नये उपन्यासों में नए प्रयोग', प्रभात प्रकाशन दिल्ली, प्र. सं. 1994, पृष्ठ 28 - 29
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह, 'मुखड़ा क्या देखे', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 1996 पृष्ठ - 2
3. वही, पृष्ठ - 46
4. डॉ. क्षितिज धुमाळ बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 2006, पृष्ठ-194

□ □ □